

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 19, जोशुआ 20-21 लेविटिकल और शरणार्थी शहर

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 19, जोशुआ 20-21, लेविटिकल और शरणार्थी शहर है।

पुनः नमस्कार. इस खंड में, हम यहोशू की पुस्तक के अनुभाग के अंतिम दो अध्यायों को देखने जा रहे हैं जिनके बारे में हमने विरासत के वितरण या भूमि वितरण अनुभागों, अध्याय 13 से 31 के बारे में बात की थी। केवल समीक्षा करने के लिए, अध्याय 13 19 को प्रत्येक व्यक्तिगत जनजाति के लिए वितरण दिया गया। अध्याय 13, वे जनजातियाँ जो इस मानचित्र पर जॉर्डन के पूर्व में बस गईं।

हम यहाँ कनान की भूमि को देख सकते हैं और वास्तव में जॉर्डन के पूर्व में, इस तरह से ढाई जनजातियाँ होंगी, यहोशू 13, और फिर बाकी जनजातियाँ जॉर्डन के पश्चिम में बस गईं। सबसे महत्वपूर्ण यहाँ नीचे यहूदा और देश के मध्य भाग के मुख्य भाग में एप्रैम और मनश्शे हैं। अध्याय 20 और 21 थोड़े अलग हैं।

वे शहरों के प्रति समर्पित हैं। हमने पिछले खंड में उन लेवियों के बारे में उल्लेख किया है जिन्हें कोई विशिष्ट क्षेत्र नहीं मिल रहा था। बस इसकी समीक्षा करने के लिए, अध्याय 13 में, अध्याय के अंत में, श्लोक 33 में कहा गया है, कि जिन्हें ट्रांसजॉर्डन जनजातियाँ कहा जाता है, जो जॉर्डन के पूर्व में हैं, उनकी विरासत वहाँ समाप्त हो गई थी।

फिर अध्याय 13 का अन्तिम पद कहता है, परन्तु लेवी के गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया, क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा ही उनका निज भाग है, जैसा उस ने उन से कहा था। फिर उस अध्याय के पहले, हम देखते हैं कि यह अकेले लेवी के गोत्र को कहता है, श्लोक 14, अध्याय 13, अकेले लेवी के गोत्र को, मूसा ने कोई विरासत नहीं दी क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को अग्नि में दी गई भेंटें उनकी विरासत हैं, जैसे उसने उनसे कहा. इसलिए, ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध का विशेषाधिकार और ईश्वर की सेवा का विशेषाधिकार उनकी विरासत माना जाता था।

फिर अंत में अध्याय 18 में, एक समान पद, अध्याय 18, पद 7, लेवियों का तुम्हारे बीच कोई हिस्सा नहीं है क्योंकि प्रभु का पौरोहित्य उनकी विरासत है। तो, हमारे पास तीन अलग-अलग दृष्टिकोण हैं, अग्नि द्वारा चढ़ावा, पौरोहित्य, और स्वयं भगवान उनकी विरासत हैं। लेकिन यह सब, निस्संदेह, ईश्वर की सेवा और उसके साथ घनिष्ठ संबंध के इस विचार के अंतर्गत समाहित है।

इसलिए, जब हम अध्याय 20 और 21 पर आते हैं, तो ये अब शहरों का वितरण हैं। और एक अर्थ में, हम 21 के बारे में सोच सकते हैं, जो वह अध्याय है जो लेविटिकल शहरों कहलाने वाले लोगों के बारे में बात करता है। वह बड़ा सेट है।

और अध्याय 20 छोटा सेट है। इन्हें शरण नगर कहा जाता है। वहाँ 48 लेवीय नगर हैं और वे सभी जनजातियों में फैले हुए हैं, प्रति जनजाति लगभग चार।

वहाँ कुछ जनजातियाँ हैं जहाँ लेवितिकल शहरों को पाँच मिलते हैं, और इसी तरह कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें केवल तीन मिलते हैं। लेकिन इसके विपरीत, लेवी देश भर में प्रति गोत्र में चार-चार लोग बिखरे हुए हैं। चार गुना 12 48 है।

दूसरी ओर लेवीय नगर, मुझे खेद है, दूसरी ओर शरण नगर एक उपसमूह हैं। शरण के छः नगर लेवीय नगर हैं। वे अध्याय 21 में आते हैं, लेकिन वे एक अलग प्रकार के शहर हैं जिनके बारे में हम शीघ्र ही बात करेंगे।

तो, चलिए पहले अध्याय 20 पर चलते हैं। और ये शरणनगर कहलाते हैं। उनमें से छह हैं।

और मुझे लगता है कि वास्तव में शुरू करने का स्थान निर्गमन अध्याय 21 की पुस्तक में है, क्योंकि यहीं पर भगवान सबसे पहले इस बारे में बात करते हैं। इसलिए, यदि आप अपनी बाइबिल के निर्गमन अध्याय 21 को लेते हैं और श्लोक 12 से 14 को देखते हैं, तो यह कहता है, जो कोई किसी आदमी को मारेगा ताकि वह मर जाए, उसे मौत की सज़ा दी जाएगी। परन्तु यदि वह उसकी घात में न लगा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में पड़ने दिया, तो मैं तुम्हारे लिये एक स्थान ठहराऊंगा, जिस में वह भाग सके।

तो, यहाँ मुद्दा यह है कि यदि जानबूझकर पूर्व-चिन्तित हत्या की जाती है, तो मृत्युदंड का प्रावधान है। लेकिन अगर यह अनजाने में है, अगर यह हत्या है, तो मान लीजिए, भगवान उन्हें बख्श देंगे। तो, इससे पता चलता है कि अंतर है।

कानून स्वयं उद्देश्यों में अंतर को पहचानता है और उनसे निपटने के विभिन्न तरीके रखता है। यह कहता है कि परमेश्वर एक स्थान नियुक्त करेगा जहाँ तुम भाग जाओगे। और निस्संदेह, यहोशू 20 वह स्थान है जहाँ हम पढ़ते हैं कि वे स्थान क्या हैं।

निर्गमन 21, श्लोक 14 में भी ध्यान दें, यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर दूसरे पर चालाकी से हमला करके उसे मार डाले, तो तू उसे मेरी वेदी के पास से उठा लेना, कि वह मर जाए। तो इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि यदि कोई, यदि वे वेदी पर हैं, वेदी से चिपके हुए हैं, तो उनके लिए कुछ सुरक्षा, कुछ अभयारण्य है। जबकि यदि वे उसे उससे दूर ले जाते हैं, तो वे भगवान की सुरक्षा से बाहर हो जाते हैं और उन्हें मौत की सज़ा दी जा सकती है।

दिलचस्प बात यह है कि 1 किंग्स में ऐसे कुछ संदर्भ हैं कि कोई उन लोगों से बचने के लिए वेदी के सींगों से चिपक जाता है जो उन पर हमला कर रहे हैं। 1 राजा 1 और 2 में, हमारे पास इसके दो संदर्भ हैं। और आमोस की किताब में भगवान से यह कहते हुए एक व्यंग्यात्मक संदर्भ है, मैं वेदियों के सींगों को तोड़ने जा रहा हूँ।

दूसरे शब्दों में, मैं वह स्थान छीनने जा रहा हूँ जहाँ तुम्हें शरण मिल सके। क्योंकि आमोस के समय तक, इज़राइल इतना भ्रष्ट हो गया था कि भगवान बस यही कह रहे थे, ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ आप छिप सकें और कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ आप भाग सकें। मैं सज़ा देने जा रहा हूँ।

लेकिन आइए अब दूसरे अनुच्छेद पर वापस जाएं, जो अधिक विस्तृत है, और वह संख्या अध्याय 35 की पुस्तक में है। और संख्या 35 हमें आगे की ओर देखते हुए, शरण के शहरों का अधिक विस्तृत विवरण देता है। और सबसे पहले, यह लेवीय शहरों से शुरू होता है, संख्या 35, 1 से 8। यह जोशुआ के अध्याय 21 के अनुरूप होगा।

फिर श्लोक 19 से 29, अध्याय इन शरण नगरों के बारे में बात करता है। तो श्लोक 10 और 11, संख्या 35, भगवान मूसा से बात करते हुए कहते हैं, इस्राएल के लोगों से बात करो। उन से कह, जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुंचो, तब अपने लिये शरण नगर होने के लिये छः नगर चुन लेना, कि जो खूनी किसी को बिना अभिप्राय के घात करे वह वहां भाग जाए।

यह बदला लेनेवालों से बचने का आश्रय होना चाहिए। वह तब तक नहीं मर सकता जब तक वह मंडली में खड़ा न हो। और इसी तरह यह चलता रहता है।

तो यह प्रस्तावना है। यह जोशुआ के अध्याय 20 की पृष्ठभूमि है जिसे हम यहां पा रहे हैं। तो आइए अब उस अध्याय की ओर मुड़ें, अंततः, निर्गमन से यहोशू अध्याय 20 तक।

और परमेश्वर ने यहोशू को वैसा ही निर्देश दिया जैसा उस ने मूसा के द्वारा कहा था, पद 1 और 2, कि शरण के नगर नियुक्त करो जिनके विषय में मैं ने मूसा के द्वारा तुम से कहा था, कि जो खूनी किसी पर बिना इरादे वा अनजाने में वार करे वह वहां भाग जाए। खून के पलटा लेने वाले से तुम्हारे लिये शरणस्थान होगा। और यहां श्लोक 3 में चीजों की अनजानेपन के बारे में विचार महत्वपूर्ण है।

यह एक तरह से कहता है कि बिना इरादे के या अनजाने में भी वहां से भाग सकते हैं। तो फिर, यह इन ग्रेडेशन और कानून में संवेदनशीलता को दर्शाता है कि ये चीजें कौन हैं। जाहिर तौर पर खून का बदला लेने वाला वह व्यक्ति था जो आकर बदला ले सकता था।

अब, सारा प्रतिशोध अंततः ईश्वर को ही करना था। लेकिन यह परिप्रेक्ष्य था कि वे कर सकते थे, कभी-कभी कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो ये प्रतिशोध लेता है। इसलिए, खून का बदला लेने वाले का उल्लेख विशेष रूप से पुराने नियम में केवल चार बार किया गया है, संख्या अध्याय 35, व्यवस्थाविवरण 12, और फिर 2 सैमुअल अध्याय 14 में।

अधिकांश संदर्भों में इन लोगों की तरह ऐसा प्रतीत होता है, यह एक अवैध या अर्ध-कानूनी संदर्भ है। तो, यह कोई निजी प्रतिशोध नहीं ले रहा है। यहाँ शब्द गोयल है हादम .

यह एक ऐसा शब्द है जो अन्य सन्दर्भों से परिचित है। यह रूथ की पुस्तक में पाया जाता है, जिसे आमतौर पर रिश्तेदार उद्धारक के रूप में अनुवादित किया जाता है।

तो, इस मामले में, यह किसी प्रकार का करीबी रिश्तेदार है जिसे कुछ दायित्व पूरे करने थे। लेकिन इस मामले में, यह अधिक नकारात्मक बात है। रूथ की पुस्तक में हम देखते हैं कि यह कहीं अधिक सकारात्मक है जहां वे पारिवारिक संपत्ति आदि को भुना सकते हैं।

लेकिन यहां खून के प्रतिशोध का विचार, खून का बदला लेने वाला निजी प्रतिशोध लेने के लिए स्वतंत्र नहीं है। बाइबल स्पष्ट रूप से स्वयं ईश्वर के प्रति प्रतिशोध सुरक्षित रखती है। व्यवस्थाविवरण 32 श्लोक 35 स्पष्ट रूप से कहता है, प्रतिशोध मेरा है।

मैं बदला चुकाऊंगा, प्रभु कहते हैं। यह यशायाह अध्याय 34 में दोहराया गया है। और निस्संदेह, पॉल इसे रोमियों 12 में उद्धृत करता है।

और संख्या 35 बहुत स्पष्ट रूप से बताती है कि खून का बदला लेने वाला केवल कुछ शर्तों के तहत किसी को मारने के लिए स्वतंत्र है। अर्थात्, यदि उन्होंने किसी और को मार डाला है। और नंबर एक, यदि वे शरण नगर से निकले हैं।

दूसरे शब्दों में, वे उस सुरक्षात्मक अभयारण्य में नहीं हैं। और यदि वह व्यक्ति हत्या का दोषी है, मानव वध का नहीं। तो यह संख्या 35 से बहुत स्पष्ट है।

और इसलिए रक्त का बदला लेने वाले को स्पष्ट रूप से समाज में, या दूसरे शब्दों में, भगवान का प्रतिशोध लेने के लिए कानूनी दर्जा प्राप्त था, निजी प्रतिशोध नहीं। यह दिलचस्प है कि यहां अध्याय 20, छंद चार से छह, इस खंड का दूसरा भाग, उन स्थितियों के बारे में बात करता है जिनमें अपराधी शरण के शहरों में शरण पा सकते हैं और वे कितने समय तक वहां रह सकते हैं। और वहां दो चीजें हैं।

श्लोक छह के अनुसार, यह कहता है, वह उस शहर में तब तक रहेगा जब तक कि वह न्याय के लिए मण्डली के सामने खड़ा न हो जाए। तो, पहली बात यह है कि उन्हें किसी प्रकार के न्यायाधिकरण के समक्ष अपना बचाव करने, अपनी बेगुनाही का बचाव करने का मौका मिलना चाहिए। और फिर दूसरी बात, यह उस व्यक्ति की मृत्यु तक होना चाहिए जो उस समय महायाजक है।

तब खूनी अपने नगर को, और जिस नगर से वह भागा है अपने घर को लौट जाए। तो यह महायाजक और उस व्यक्ति के उस व्यक्ति से संबंध के बारे में एक महत्वपूर्ण बिंदु है जिसने अपराध या अपराध किया है। और उस व्यक्ति को महायाजक की मृत्यु तक नगर में रहना होगा।

अब उससे बहुत सारी चीजें बन चुकी हैं। और नए नियम के विशिष्ट दृष्टिकोण से, पुराने नियम को देखते हुए, यीशु, निस्संदेह, हमारे महान महायाजक हैं। और उसकी मृत्यु ही उसके पुनरुत्थान के साथ-साथ हमें बचाती है।

और इसलिए वहां कुछ टाइपोलॉजिकल कनेक्शन हो सकते हैं। लेकिन निश्चित रूप से, इसका तात्कालिक प्रभाव और तात्कालिक संदेश यह है कि जिस हत्यारे ने गलती से किसी की हत्या कर

दी, वह अपने मामले पर बहस करने के बाद बिना सोचे-समझे जाने के लिए स्वतंत्र नहीं है। लेकिन किसी न किसी तरह की मौत तो होनी ही है।

और यह अभी उसकी मृत्यु नहीं है, बल्कि महायाजक की मृत्यु एक प्रकार का प्रतीक है। और यह वह ट्रिगर है जो उसे घर जाने की इजाजत देता है, लेकिन यह एक प्रतीक है कि यह एक अनुस्मारक है कि उसके कार्य बहुत गंभीर थे। एक जान ले ली गई, भले ही अनजाने में।

और एक मृत्यु होगी जो उस बिंदु पर रिहाई का कारण बनेगी। यहाँ एक ऐसा प्रश्न उठता है। इस परिच्छेद में इसे विशेष रूप से संबोधित नहीं किया गया है, लेकिन यह इसके चारों ओर घूमता रहता है।

और वह यह है, शरण नगर उन लोगों के लिये हैं जिन्होंने हत्या की है। उनके कारण अनजाने में मौत हुई है। और इसलिए सवाल यह उठता है कि क्या पुराने नियम में जानबूझकर किए गए पापों, हत्या या अन्य पापों और जानबूझकर और जानबूझकर किए गए पापों के लिए क्षमा है? कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि लेविटिकस के पहले सात अध्यायों में बलिदान प्रणाली में, जहां आपके पास शांति प्रसाद, क्रमिक प्रसाद, पाप बलिदान, इत्यादि हैं, वहां जानबूझकर किए गए पाप के लिए वास्तव में कोई विशिष्ट बलिदान नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि वे सभी अनजाने प्रकार के पाप के लिए हैं। और संख्या अध्याय 15 में, एक आश्चर्यजनक अनुच्छेद है जो यह संकेत देता प्रतीत होता है कि जानबूझकर किए गए पाप के लिए कोई क्षमा नहीं है। यहां बताया गया है कि इसे कैसे पढ़ा जाता है।

संख्या 15 श्लोक 30। जो कोई भी अवज्ञापूर्वक पाप करता है, चाहे वह देशी हो या परदेशी, दूसरे शब्दों में, देशी-जन्मा या गैर, वह शब्द जिसके बारे में हम पहले बात कर चुके हैं, एक विदेशी। जो कोई भी अवज्ञापूर्वक पाप करता है, चाहे वह मूल-निवासी हो या गैर, वह प्रभु की निन्दा करता है।

और उस व्यक्ति को उसके लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए। श्लोक 31, क्योंकि उस ने यहोवा के वचन का तिरस्कार किया और उसकी आज्ञाओं को तोड़ा है, वह मनुष्य निश्चय नाश किया जाए, और उसका दोष उस पर बना रहे। और अंतर्राष्ट्रीय संस्करण, जब यह कहता है कि जो कोई भी निडरता से पाप करता है, तो शाब्दिक रूप से हिब्रू में, यह ऊंचे हाथ से या ऊंचे हाथ से होता है।

यह लगभग भगवान के चेहरे पर अपनी मुट्ठी हिलाने की कल्पना जैसा है। जो कोई इस तरह से पाप करता है, जैसे कि ईश्वर का विरोध करना, उसे अस्वीकार करना, उसे चुनौती देना, ईश्वर की निन्दा करना, उस तरह के पाप के लिए कोई माफी नहीं है। तो, इस तरह के तर्कों के कारण, कुछ ईसाइयों ने वास्तव में आगे तर्क दिया है कि, इसलिए, यह पुराने नियम की बलिदान प्रणाली पर ईसा मसीह के नए नियम के बलिदान की श्रेष्ठता को दर्शाता है।

पुराने नियम में जानबूझकर किए गए पाप के लिए कोई क्षमा नहीं है, जबकि मसीह का बलिदान सभी पापों को ढक देता है। अब, प्रतिक्रिया के माध्यम से, मैं सबसे पहले यह पुष्टि करना चाहता हूँ कि, हां, निश्चित रूप से, मसीह का बलिदान सभी प्रकार के, सभी मामलों में पुराने नियम के

बलिदानों से असीम रूप से बेहतर था। इब्रानियों की पुस्तक इसे पूरी तरह से स्पष्ट करती है, विशेषकर अध्याय 7 से 10 में।

लेकिन यहां एक अधिक सीमित प्रश्न है, और वह यह है कि क्या पुराने नियम में जानबूझकर किए गए पाप का प्रायश्चित किया जा सकता है। और मुझे लगता है कि उत्तर निश्चित रूप से हाँ होना चाहिए। अन्यथा, हमें ऐसे बहुत से पापों के उदाहरण मिलते हैं जो जानबूझकर किए गए हैं, और पुराने नियम के किसी भी आस्तिक को तब माफ नहीं किया जा सकता था।

हमारे यहाँ इब्राहीम पाप कर रहा है, मूसा पाप कर रहा है, और यहोशू, और दाऊद बतशेबा के साथ पाप कर रहा है। निश्चित रूप से, बतशेबा के साथ डेविड का व्यभिचार आकस्मिक, आकस्मिक या अनजाने में नहीं था, बतशेबा के पति की उसकी हत्या, इत्यादि।

इसलिए, मुझे लगता है कि दो बिंदु होंगे जिनका हम समर्थन कर सकते हैं। सबसे पहले, यदि आप लैव्यव्यवस्था 1 में जाते हैं, जहां होमबलि की चर्चा है, तो शब्द ही कुछ इस तरह का संकेत देते हैं। लैव्यव्यवस्था 1, श्लोक 4 में, यह कहा गया है कि उसके लिए प्रायश्चित करने के लिए होमबलि स्वीकार की जाएगी।

और इससे पता चलता है कि किसी के लिए प्रायश्चित किया जा सकता है। लैव्यव्यवस्था 14, श्लोक 19 और 20 में याजक के बारे में कहा गया है कि वह उसके लिए प्रायश्चित करने के लिए अन्नबलि के साथ वेदी पर होमबलि चढ़ाता है, और वह शुद्ध हो जाएगा। तो, मुझे लगता है कि होमबलि से पता चलता है कि पुराने नियम में जानबूझकर किए गए पापों के लिए प्रायश्चित है।

और फिर दूसरी बात, मुझे लगता है कि संख्याओं में एक परिच्छेद को देखना भी महत्वपूर्ण है। इसलिए, यदि आप मेरे साथ संख्या अध्याय 5 की ओर जाना चाहते हैं, जो जानबूझकर किए गए पाप के मुद्दे को भी संबोधित करता है। और यह संख्या 5, श्लोक 6 से 8 है। और मुझे इसे आपके लिए यहां खोजने दीजिए।

इसलिये परमेश्वर ने मूसा से कहा, गिनती 5, पद 6, इस्राएल के लोगों से बात करना जब कोई पुरुष या स्त्री यहोवा पर विश्वास तोड़कर उन पापों में से कोई पाप करे जो लोग करते हैं। विश्वास तोड़ना शब्द एक ऐसा शब्द है जिसके बारे में हम पहले ही जोशुआ अध्याय 7, श्लोक 1 में आकान के संबंध में बात कर चुके हैं, जहां यह कहा गया है कि इस्राएल ने समर्पित चीजों के मामले में प्रभु के साथ विश्वास तोड़ दिया। और यह पता चला कि यह अचन ही था जिसने चीजें चुराई थीं।

हमने उल्लेख किया है कि यह शब्द वैवाहिक बेवफाई के संदर्भ में भी आता है। तो यहाँ भी यही बात है, जब पुरुष या महिला कोई भी पाप करते हैं जो लोग करते हैं, तो पापों का एक पूरा समूह होता है जो भगवान के साथ अनुबंध के विश्वास को तोड़ने का उदाहरण होगा। इसलिए जब कोई व्यक्ति ये काम करता है और उस व्यक्ति को अपने अपराध या अपने अपराध का एहसास होता है, तो वह अपने पापों को स्वीकार करेगा जो उसने किए हैं और वह अपने अपराध के लिए पूरा मुआवजा देगा, और इसमें पांचवां हिस्सा जोड़कर उसे देगा, जिस पर उसने अपराध किया था।

लेकिन अगर आदमी के पास कोई अगला रिश्तेदार नहीं है, तो यह बहाली के बारे में बात करता है। तो यहाँ यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इस श्रेणी का कोई भी पाप विश्वास को तोड़ रहा है और उनमें से अधिकांश जानबूझकर किए गए होंगे। वे अनजाने नहीं हैं।

क्षमा है। यदि व्यक्ति अपना अपराध स्वीकार करता है, तो आवरण, बलिदान आवरण है। इसलिए, मुझे लगता है कि यहाँ अंतर यह है कि पुराने नियम में ज़ोर से किए गए पापों के लिए कोई माफ़ी नहीं है, दूसरे शब्दों में, जानबूझकर प्रभु के विरुद्ध उद्दंड, पश्चातापहीन तरीके से किए गए पापों के लिए कोई माफ़ी नहीं है।

लेकिन यदि हाथ नीचे कर दिया जाए और व्यक्ति को अपने अपराध का एहसास हो जाए और वह अपना पाप स्वीकार कर ले, तो स्पष्ट रूप से यहां पाप की क्षमा है। तो मुझे लगता है कि यह हमारे लिए सुनने और इस्राएलियों के लिए यह जानने के लिए एक उत्साहजनक बात है कि इस प्रकार के पापों के लिए भी क्षमा है। तो वापस जोशुआ की किताब और अध्याय 20 के बारे में अंतिम शब्द पर।

तो, उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्होंने छह शहरों को अलग कर दिया, श्लोक सात से आठ, और उनमें से तीन ट्रांसजॉर्डन क्षेत्र में, जॉर्डन के पूर्व में, और तीन जॉर्डन के पश्चिम में निकले। और जिस तरह से वे हर जगह बिखरे हुए हैं, उनमें से कोई भी एक दिन की पैदल दूरी, एक दिन की यात्रा से अधिक नहीं है। इसलिए, इस प्रकार के अभयारण्य को खोजने की आवश्यकता वाले सभी लोगों के लिए पूरे देश में पहुंच उपलब्ध होगी।

अब, यह वास्तव में एक दिलचस्प तरह की अवधारणा है। श्लोक नौ एक तरह से पूरी बात का सारांश है। ये वे नगर हैं जो इस्राएल के सब लोगों और उनके बीच रहने वाले परदेशियों, गेर, परदेशी, परदेशी के लिये ठहराए गए हैं, कि जो कोई किसी को बिना इरादे के मार डाले वह वहां भाग जाए, और पलटा लेनेवाले के हाथ से न मरें। जब तक वह मण्डली के सामने खड़ा नहीं हुआ तब तक खून बहाता रहा।

तो यह एक सुंदर, बहुत दिलचस्प और पेचीदा प्रकार का विचार है। यह अद्भुत होगा यदि हमारे पास बाद में पवित्रशास्त्र में इसके कुछ उदाहरण हों, जहां किसी ने न्यायाधीशों या सैमुअल या कहीं राजाओं की पुस्तक में वर्णित कहानियों में ऐसा किया हो। दुर्भाग्य से, हमारे आधुनिक दृष्टिकोण से, हमें इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता कि इसे निभाया जा रहा है।

तो, या तो वास्तव में इसका अभ्यास कभी नहीं किया गया था, या यदि ऐसा था, तो भगवान के मार्गदर्शन के तहत पवित्रशास्त्र के लेखकों ने महसूस किया कि इसे हमारे लिए रिकॉर्ड करना आवश्यक नहीं था। लेकिन निश्चित रूप से, सिद्धांत यहाँ हैं, और यह दर्शाता है कि ईश्वर एक दयालु ईश्वर है, जो मानकों और मानव जीवन का मूल्य रखता है। उसके लिए कुछ क्षतिपूर्ति की आवश्यकता है, लेकिन गलती से मारने वाले के लिए दया भी होनी चाहिए।

वे अभयारण्य ढूँढने और उससे बचाए जाने में सक्षम हैं। तो यह अध्याय 21 है, शरण के छह शहर, जो शहरों के बड़े समूह का एक उपसमूह हैं, जो लेवीय शहर हैं। तो, अब हम अध्याय 21 की ओर मुड़ेंगे और लेवियों के नगरों को देखेंगे।

और पहली चीज़ जो हम देखेंगे वह 21 में है, पहली तीन पंक्तियाँ अंतिम छोटा विवरण है जहाँ कोई यहोशू और नेताओं से उनकी ज़मीन माँगने आता है। हमारे पास कालेब और कालेब की बेटी अक्सा और सलोफाद की बेटियों, यूसुफ के गोत्रों के पहले के उदाहरण हैं। और यहाँ पाँचवाँ भाग है, जहाँ यह कहता है, अध्याय 21, पद एक, जब लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष एलीआजर याजक और नून के पुत्र यहोशू, और पितरों के घरानों के मुख्य पुरुषों के पास आए। इस्राएल के लोगों की जनजातियाँ।

तो, यहां औपचारिक विवरण पर ध्यान दें। यह एलीआजर याजक, नून का पुत्र यहोशू है। इसलिए दो नियुक्त नेता, पुजारी और यहोशू, दूसरा नेता।

तो, यह सब बड़े करीने से और क्रम से किया जा रहा है। यही बात है। और मुझे लगता है कि यह एक ऐसा सूत्र है जिसे हम भूमि वितरण सूची के माध्यम से देख सकते हैं।

यह ओक्लाहोमा भूमि हड़पने का मामला नहीं है जहां लोग अपनी भूमि के टुकड़े को हड़पने की कोशिश करने के लिए बाहर निकल रहे हैं। यह सब ऑर्डर कर दिया गया है। हम सभी साक्ष्य अध्याय 13 और 19 में देखते हैं।

और ये उसी क्रम में जारी है। पद दो, उन्होंने कनान देश के शीलो में उन से कहा, यहोवा ने मूसा के द्वारा आज्ञा दी, कि हमें हमारी चरागाहों और पशुओं समेत रहने के लिये नगर दिए जाएं। इसलिये यहोवा की आज्ञा से इस्राएलियों ने लेवियों को उनके निज भाग में से ये नगर और चरागाहें दीं।

फिर हम शेष अध्याय को देखते हैं, चिट्ठी डालने और उन चिट्ठी के द्वारा नगरों का वितरण। यह लगभग एक प्रकार की अभेद्य सूची है। श्लोक चार से आठ में एक सामान्य सिंहावलोकन है।

यह विभिन्न कुलों के बारे में बताता है, हारून के पुत्र, हारून के वंशज, चिट्ठी, पद चार, कहातियों के कुलों से। और फिर गेशोनियों, श्लोक छह, मरारियों, ये सभी हारून, महायाजक, मूल महायाजक के वंशज हैं। और श्लोक आठ में उन नगरों और चरागाहों का सारांश दिया गया है जिन्हें इस्राएल के लोगों ने लेवियों को चिट्ठी डालकर दिया, जैसा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा आज्ञा दी थी।

तो, क्षमा करें, हम इस विचार को देखते हैं कि भूमि को लॉट द्वारा वितरित किया जा रहा है। और निस्संदेह, यह कुछ ऐसा है जिसे हम बाद में पुराने नियम में भी पाते हैं। और यह निश्चित रूप से प्रतीत होगा कि यह कुछ ऐसा है जिसे ईश्वर आयोजित कर रहा है।

नीतिवचन की पुस्तक इस बारे में बात करती है कि कैसे भाग्य परमेश्वर द्वारा व्यवस्थित किया जाता है, और परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया जाता है। इसलिए आज, अधिकांश ईसाई पासे या इस

तरह की चीजें फेंककर जुए को हतोत्साहित करेंगे। लेकिन बाइबल में, इस तरह की चीज़ उस तरीके का हिस्सा है जिस तरह से भगवान ने काम किया और अपने लोगों को अपनी इच्छा बताई।

एस्तेर की किताब में इसका एक दिलचस्प प्रकार का फुटनोट, इसका साइड नोट है। हिब्रू में बहुत कुछ के लिए मुख्य शब्द गोरल, गोरल शब्द है। एस्तेर की पुस्तक में, आपको याद होगा कि उन्होंने उन दिनों को निर्धारित करने के लिए भी चिट्ठी डाली थी जिनमें यहूदियों पर हमला किया जाएगा इत्यादि।

वहाँ शब्द है पुर , पुर । और कई विद्वानों ने एस्तेर की पूरी कहानी या उसके कुछ हिस्सों पर अविश्वास किया है। इसका एक कारण यह है कि पुर शब्द गोरल शब्द नहीं है।

यह उस लॉट के लिए शब्द नहीं है जो सामान्यतः पाया जाता है। और उन्होंने सोचा कि उन्होंने तर्क दिया होगा कि एस्तेर की किताब सिर्फ काल्पनिक है या उसका वह हिस्सा काल्पनिक है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि 1960 के दशक में, शायद 70 के दशक की शुरुआत में, मेसोपोटामिया में कहीं खुदाई के दौरान , मिट्टी से बना प्रत्येक तरफ लगभग दो या तीन इंच का एक छोटा सा घन मिला था।

और असीरियन भाषा में, शायद फ़ारसी भाषा में, शब्द ने पुर , पुर कहा। और यह वास्तव में एक दिलचस्प बाइबिल से इतर पुष्टि थी कि उस समय, यह एक ऐसा शब्द था जिसका उपयोग किया जाता था, भले ही सामान्य तौर पर बाइबिल में, यह बहुत से एक अलग शब्द है। परन्तु जो भी हो, यहाँ मुद्दा यह है कि लोगों को, लेवियों को उनके सभी नगर सावधानीपूर्वक बँटवारे के द्वारा मिले।

और फिर, लेवी, जनजातियों में बिखरे हुए थे, अनिवार्य रूप से प्रति जनजाति चार लेवीय शहर, वे स्वयं जनजातियों में खमीर और नमक और प्रकाश की तरह थे, या कम से कम उन्हें होना चाहिए था। हम इज़राइल के इतिहास में बाद में जानते हैं कि वे कई बार भ्रष्ट थे और महायाजक राजा के समान ही भ्रष्ट थे। लेकिन वह उनका काम था।

वह एक आध्यात्मिक कार्य था। और वे किसी छोटे पवित्र परिक्षेत्र में नहीं बसे थे। वे फैले हुए थे।

मुझे लगता है कि यह आज हमारे लिए एक अच्छा सबक है। मैं कोलंबिया में मिशन क्षेत्र में बड़ा हुआ हूँ। शायद 19वीं शताब्दी से मिशनरियों की विशिष्ट रूढ़ि यह है कि वे बाहर जाएंगे और इसे कहीं भी करेंगे, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, या एशिया, और वे इन मिशनरी यौगिकों की स्थापना करेंगे।

और वे बहुत अच्छे और बहुत आलीशान थे इत्यादि। और वहाँ से, वे अपने आस-पास के अपवित्र और ईश्वरविहीन क्षेत्रों में जाने का साहस करेंगे। मैं भाग्यशाली था, मेरे माता-पिता इस मिशन के साथ रहने के लिए भाग्यशाली थे, और आज अधिकांश मिशन ऐसे हैं, जहाँ हम सिर्फ कोलंबियाई लोगों के बीच रहते थे।

और हमने अपने पड़ोसियों से दोस्ती की और मिशनरियों द्वारा चर्चों या अन्य चीजों के माध्यम से किए जाने वाले औपचारिक कार्यक्रमों के अलावा, उनके साथ ईसा मसीह के बारे में बात करने में सक्षम हुए। तो, यह भी उस तरह की चीज़ का एक अच्छा उदाहरण है। इस अंतिम छोटे खंड में, मैं जोशुआ अध्याय 21 को समाप्त करना चाहता हूँ।

यह लेवीय नगरों के बारे में अध्याय है। और यह संपूर्ण भूमि विरासत, भूमि वितरण सूची अनुभाग 13 से 21 का अंतिम अध्याय है। लेकिन यहोशू अध्याय 21 के अंतिम तीन छंद इस बिंदु तक पूरी पुस्तक का एक प्रकार से समापन हैं।

और कुछ मायनों में, यह पुस्तक में पाए जाने वाले सभी प्रमुख विषयों को पकड़ लेता है। तो, आइए इसे देखें और इसे संक्षेप में अलग करें। अतः यहोशू 21 श्लोक 43 में कहा गया, यहोवा ने इस्राएल को सारी भूमि दे दी।

तो, भगवान के उपहार का विचार है। यह उनके लोगों, इज़राइल के लिए भी है, यह भूमि है। परमेश्वर ने इस्राएल को वह सारा देश दिया, जिसे देने की उस ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी।

तो यह अब्राहमिक वाचा है। वह वादा निभाने वाला भगवान है। तो, वे सभी चीज़ें इन छंदों में बस कुछ ही शब्दों में यहीं संकुचित हो गई हैं।

अतः उन्होंने इस पर कब्ज़ा कर लिया। यही विरासत का विचार है। वे वहीं बस गये।

पद 44, प्रभु ने उन्हें विश्राम दिया। विश्राम का यही विचार है जिसके बारे में हमने इस पुस्तक में बात की है। जैसा उस ने उनके बापदादों से शपथ खाकर कहा था, वैसा ही उनको सब ओर से विश्राम दिया।

फिर, वादा निभाने वाले परमेश्वर, उनके सभी शत्रुओं में से एक ने भी उनका सामना नहीं किया था। तो यह अध्याय एक, श्लोक पाँच को प्रतिध्वनित करता है। कोई भी यहोशू का सामना नहीं कर सकेगा क्योंकि परमेश्वर ने उनके सभी शत्रुओं को उनके हाथों में दे दिया था।

और फिर अंत में, श्लोक 45 में, प्रभु ने इस्राएल के घराने से जो अच्छे वादे किए थे उनमें से एक भी शब्द विफल नहीं हुआ था। सब कुछ हो गया। तो वहाँ फिर से, वादा निभाने वाले भगवान, उन शब्दों में से कोई भी विफल नहीं हुआ।

अब यह दिलचस्प है। मुझे लगता है कि अधिकांश अंग्रेजी संस्करण कहते हैं कि वादों में से एक भी शब्द विफल नहीं हुआ। हिब्रू में, शब्द गिर गया, गिर गया।

और जैसे बात कही जा रही है, कोई भी शब्द व्यर्थ नहीं है। वे उतरे और वे समाहित हो गये। उनका स्वागत किया गया।

कोई भी शब्द अतिरिक्त बर्बादी के रूप में जमीन पर नहीं गिरा। एक दिलचस्प कविता है जो इसी से मिलती-जुलती है। यह 1 सैमुअल की किताब में है।

और यह ईश्वर से बात करने, या सैमुअल से बात करने के संदर्भ में है। और मैं उस ओर जाना चाहूँगा, 1 शमूएल अध्याय तीन। और इस अध्याय में, हमने शमूएल को अब परमेश्वर के अगले मनुष्य के रूप में स्थापित किया है।

और उसकी मुलाकात एली से होती है और भगवान रात के दौरान सैमुअल से बात करते हैं। और यह पता चला कि उसके पास एली के घर के लिए दुर्भाग्य से विनाश का संदेश है। लेकिन फिर अध्याय के अंत में श्लोक 19 से 20 में, यह सैमुअल का मूल्यांकन करता है और कहता है कि यह ईश्वर का अगला व्यक्ति है।

और यहाँ वह है जो इसमें पढ़ा गया है। 1 शमूएल 3, पद 19. और शमूएल बड़ा हुआ, और यहोवा उसके संग रहा, और उसकी कोई भी बात भूमि पर न गिरने दी।

वही सटीक निर्माण जो हमारे पास जोशुआ में है, सिवाय इसके कि जोशुआ ने जमीन का उल्लेख नहीं किया है। लेकिन शब्दों के गिरने का विचार दोनों जगह है। और शब्दों का विचार महत्वपूर्ण है।

वे बर्बाद नहीं हुए हैं। और उसके कारण, दान से बतशेबा तक, सुदूर उत्तर से लेकर सुदूर दक्षिण तक सभी इस्राएल को पता था कि शमूएल को प्रभु के भविष्यवक्ता के रूप में स्थापित किया गया था। तो यह जोशुआ की किताब का एक अद्भुत अंत है, क्या यह सारांश है कि उसने ज़मीन दी, उसने दुश्मनों को बचाया, उसका एक भी वादा पूरा नहीं हुआ।

और वह विरासत अनुभाग का समापन है। और फिर अंतिम चेतावनियाँ अध्याय 22 से 24 में आती हैं। आप

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 19, जोशुआ 20-21, लेविटिकल और शरणार्थी शहर है।